CNews सिटी चीफ

वर्ष-15, अंक-211
पृष्ठ-8 मूल्य 2 रूपया

सुविचार

लोग अपने कर्तव्य भूल जाते हैं लेकिन अपने अधिकार उन्हें याद रहते हैं।

बिहार सिटी चीफ

छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

CITYCHIEFSENDMENEWS@GMAIL.COM

बिहार,बुधवार 06 नवम्बर 2024

सम्पूर्ण भारत मे चर्चित हिन्दी अखबार

बिहार में सबसे बड़ा होगा बिहार राज्य ग्रामीण बैंक

SBI भी पीछे; पटना में मुख्यालय

पटना, बिहार का सबसे बड़ा बैंक ग्रामीण बैंक होगा। राज्य के उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक का दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक के साथ विलय की प्रक्रिया शुरू हो गई है। केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने आपसी विलय के लिए राज्य के अधिकतम व्यापार वाले ग्रामीण बैंक में दूसरे ग्रामीण बैंक के विलय और राज्य मुख्यालय में प्रधान कार्यालय रखने का निर्देश दिया है। इसके तहत उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक जो सेंट्रल बैंक द्वारा प्रायोजित है, उसका विलय पंजाब नेशनल बैंक की ओर से प्रायोजित दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक के साथ होगा और प्रधान कार्यालय पटना में रहेगा। इससे एकीकृत ह्य बिहार राज्य ग्रामीण बैंक ह्य सूबे का सबसे बड़ा बैंक हो जाएगा और यह सभी 38 जिलों में संचालित होगा।

बिहार के साथ अन्य राज्यों में भी विलय होग- ाभारत सरकार ने उत्तर और दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक के साथ ही अन्य राज्य जहां एक से अधिक ग्रामीण बैंक कार्यरत हैं, उनके आपस में विलय की प्रक्रिया शुरू की है। इसी क्रम में सोमवार को केंद्रीय वित मंत्रालय के निदेशक सुशील कुमार सिंह ने संबंधित राज्य सरकार और प्रायोजक बैंक को पत्र लिखकर 15 नवम्बर तक सहमति देने निर्देश दिया है।

विकास की बड़ी प्रक्रिया शुरू होगी- मंगलवार को ऑल इण्डिया ग्रामीण बैंक ऑफिसर्स एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव डीएन त्रिवेदी ने बताया कि दोनों बैंकों के विलय से बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। बिहार में भारतीय स्टेट बैंक अबतक सबसे अधिक बैंक शाखाओं वाला बड़ा बैंक था जबकि ग्रामीण बैंकों के विलय से ग्रामीण बैंकों की शाखाओं की संख्या अधिक हो जाएगी।

बैंक के विलय से लाभ

1. ग्रामीण बैंक का संसाधन बढ़ जाएगा व ऋण देने की क्षमता बढ जाएगी। इससे राज्य,खासकर कर ग्रामीण अर्थ व्यवस्था मजबूत होगी।
2. ग्रामीण बैंक बाजार से पूंजी एकत्र करने में सक्षम होंगे।
3. ग्रामीण बैंक का पूंजी के लिए सरकार पर निर्भरता कम होगी और अपने स्थापना खर्च वहन में आत्मनिर्भर होंगे।

बिहार की स्वर कोकिला शारदा सिन्हा का हुआ निधन

सलमान के लिए गाया था 76 रुपये में गाना; कुछ ऐसा थी बिहार की स्वर कोकिला की शख्सियत

महापर्व छठ के गानों के लिए याद की जाने वाली लोक गायिका शारदा सिन्हा नहीं रहीं. उन्होंने 72 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह दिया. छठ के मशहूर गीतों की जन्नी शारदा सिन्हा के गीतों के बिना महापर्व छठ अधूरा है. वहीं छठ पर्व के पहले दिन नहाए-खाए को उन्होंने हम सबको अलविदा कह दिया. उन्होंने पहिले पहिल छठी मईया, केलवा के पात पर उगलन सूरजमल झुके झुके आदि जैसे फेमस छठ के गीत गाए है. साथ ही उन्होंने बॉलीवुड में भी काफी नाम कमाया है.

कैसे और कहा हुआ शारदा सिन्हा का निधन? देश-दुनिया में मशहूर गायिका शारदा सिन्हा ने दिल्ली एम्स में आखिरी सांस ली. मंगलवार यानी 5 नवंबर को 72 साल की उम्र में उनका निधन हो गया. बीते 11 दिनों से एम्स में उनका इलाज चल रहा था. दिल्ली एम्स के अनुसार, रात 9 बजकर 20 मिनट में उन्होंने आखिरी सांस ली. दो दिनों से उनकी कंडिशन सीरियस बताई जा रही थी, जिसको लेकर देश भर में दुआओं का दौर भी जारी था. एम्स की तरफ से दी गई जानकारी के अनुसार सेप्टिसीमिया की वजह से शारदा सिन्हा को रिफ्रैक्टरी शॉक लगा, जिससे उनका निधन हुआ.

कैसी थी शारदा सिन्हा की शुरुआती जिंदगी? 1 अक्टूबर 1952 को बिहार के सुपौल जिले के हुलास गांव में शारदा सिन्हा का जन्म हुआ था. उन्हें बचपन से ही संगीत का शौक था, इसलिए उनके पिता सुखदेव ठाकुर ने घर पर ही शिक्षक को रख कर उन्हें संगीत की शिक्षा दी. बेगुसराय के दियारा क्षेत्र सिहमा के ब्रजकिशोर सिन्हा से उनकी शादी हुई थी, जिनसे उनके दो बच्चे हैं. हालांकि ससुराल के शुरुआती समय में उन्हें संगीत की तालीम लेने पर विरोध का सामना करना पड़ा था. हालांकि शारदा सिन्हा के पति के उस वक्त उनका सहारा बने.

शारदा सिन्हा ने ऐसे की करियर की शुरुआत शारदा सिन्हा ने अपना पहला ऑडिशन लखनऊ के बर्लिंगटन होटल में बने एचएमवी स्टूडियो में दिया था. यहां वे द्वार के छेकाई ए भइया गाकर छा गई थीं. हालांकि शारदा सिन्हा को छठ के गीतों से पहचान मिली. उन्होंने छठ के गीतों को तब ऊंचाई तक पहुंचाया जब छठ के गीतों की प्रचलन नहीं थी. 1978 में पहली बार उन्होंने %उगो हो सूरज देव भइल अरघ केर बेर% रिकॉर्ड किया, जिसे लोगों को खूब पसंद किया. इसके बाद छठ के गीतों का उनका सफर शुरू हो गया.

पद्म श्री और पद्म भूषण महापर्व छठ के दौरान शारदा सिन्हा की आवाज दुनिया भर के घाटों पर सुनाई देती है. उन्होंने पहिले पहिल छठी मईया, केलवा के पात पर उगेलन सुरुल मल, हे छठी मइया, सुनअ छठी माई, जैसे कई मशहूर छठ के गीत दिए हैं. अपने पूरे करिया में उन्होंने कुल 9 एल्बम में 62 छठ के गीत गाए हैं. उनके छठ के गानों के बगेर छठ पर्व अधुरा लगता है.

सलमान के लिए 76 रुपये में गाया था गाना इसके साथ-साथ उन्होंने बॉलीवुड में भी खूब नाम कमाया है. सुपरस्टार सलमान खान और भाग्यश्री की फिल्म मैंने प्यार किया का मशहूर हुआ गाना कहे तोसे सजना उन्होंने गाया है. उन्होंने इस गाने के लिए महज 76 रुपए फीस ली थी. साथ ही हम आपके हैं कोन फिल्म का गाना बाबुल जो तुमने सिखाया और गैंग्स ऑफ वासेपुर का तार बिजली से पतले भी शारदा सिन्हा की ही देन है. अपने काम के लिए उन्हें पद्म श्री और पद्म भूषण जैसे पुरस्कारों से भी नवाजा गया है.

हिस्सेदारी को लेकर दोस्तों ने दोस्त की ले ली जान

मेला दिखाने के लिए बुलाया और फिर कर दी हत्या

मुजफ्फरपुर, मुजफ्फरपुर की पुलिस ने सकरा थाना क्षेत्र में चौर में मिले नितेश उर्फ अभिनव यादव हत्याकांड का खुलासा किया है। पुलिस का कहना है कि दोस्तों ने घर से बुलवाया और फिर मेला को दिखाने के बाद उसे एक सुनसान जगह पर ले गये। फिर चाकू से गोद कर उसकी हत्या कर दी थी। पुलिस का कहना है कि इस मामले में कुल चार अपराधी शामिल थे, जिसमें से पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उन आरोपियों के पास से एक चाकू, मृतक का मोबाइल फोन और बाइक बरामद किया है। मामले की जानकारी देते हुए ग्रामीण एसपी विद्या सागर ने बताया कि बीते 10 अक्टूबर को एक युवक नितेश कुमार उर्फ अभिनव यादव के गायब होने को लेकर परिजन ने प्राथमिकी दर्ज कराई थी। मामला दर्ज होने के सातवें दिन 17 अक्टूबर को एक युवक का शव मिला, जिसकी पहचान नितेश उर्फ अभिनव के रूप में की गई। इस मामले में पुलिस ने जांच के दौरान बताया कि मृतक का कुछ लोगों के साथ लेन-देन का विवाद था। नितेश उर्फ अभिनव यादव से लगातार बकाये की मांग की जा रही थी, जिसे वह पूरा नहीं कर पा रहा था। इसी वजह से उसके चार दोस्तो ने मेला देखने और घूमने के बहाने बुलाया और फिर एक सुनसान जगह पर ले जाकर चाकू से गोद कर उसकी बेरहमी से हत्या कर दी। हत्या के बाद उसके शव को एक पास के ही चौड़ के पास फेंक दिया। पुलिस को जांच के दौरान मृतक का मोबाइल फोन वही पाया गया। पुलिस ने जांच में पता चला कि मृतक अभिनव का कुछ लड़कों से लेन देन का मामला था, जिसके बाद इस मामले में दो आरोपी मनीष कुमार और बबलू कुमार को पकड़ा गया, जिसने इस घटना में अपनी संलिप्तता को स्वीकार किया और बताया कि हमारा हिस्सा अभिनव नहीं दे रहा था इसलिए हमलोग ने हत्या कर दी। इस मामले में कुल 4 लोग शमिल थे, जिसमें दो आरोपी पकड़े गए हैं। अन्य दो की गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी की जा रही है।

बिहार के यात्रियों के लिए सौगात बनीं जनसेवा एक्सप्रेस

अंबाला, छठ पर्व के दौरान रेलवे द्वारा चलाई गई स्पेशल ट्रेनें इस बार यात्रियों के लिए सौगात बनकर आई और इससे रेलवे की लाज भी बच गई जबकि पिछली बार स्पेशल ट्रेनों की कमी और देरी से चलने के कारण यात्रियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ा था और इससे रेलवे की भी छवि धूमिल हुई थी। लेकिन इस बार स्पेशल ट्रेनों के चलने से यात्रियों को काफी राहत मिली और वो खुशी-खुशी छठ मनाने के लिए गंतव्य की तरफ रवाना हो गए। अंबाला कैंट रेलवे स्टेशन पर मंगलवार को भी नाममात्र भीड़ ही नजर आई। हालांकि राहत की बात यह रही कि ट्रेन नंबर 14618 जनसेवा एक्सप्रेस के लेट होने से इसका फायदा स्टेशन पर मौजूद बिहार जाने वाले यात्रियों को मिला क्योंकि जनसेवा एक्सप्रेस के समय पर सरहिंद-सहरसा स्पेशल प्लेटफार्म 2 पर पहले ही आकर खड़ी हो गई। इस कारण कैंट रेलवे स्टेशन से यात्री बिना किसी परेशानी के स्पेशल ट्रेन में सवार हुए। हालांकि सुरक्षा को लेकर पहले ही रेलवे ने आरपीएफ व जीआरपी कर्मचारियों को सतर्कता बरतने के निर्देश जारी कर दिए थे।

पैंट्री की विशेष निगरानी -रेलवे के संज्ञान में आया था कि जनसेवा एक्सप्रेस में चल रही मिनी पैंट्री के कर्मचारी सीटों पर सामान रखकर कब्जा करते हैं और फिर 500 से एक हजार रुपये लेकर यात्रियों को सीट देते हैं। इस समाचार को विभागीय अधिकारियों से बात करके अमर उजाला ने प्रमुखता से छापा था। रेलवे ने ट्रेन में छापामारी करते हुए जब जांच की तो तथ्य सही पाए गए। इसके बाद जनसेवा में हालात काफी हद तक सुधर गए हैं। वहीं वापसी के दौरान भी पैंट्री कर्मचारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वो अपने निर्धारित स्थान पर सामान रखें न कि सीटों पर।

बिहार में मिड डे मील में होने जा रहा बड़ा बदलाव; मिलने जा रही ये सौगात

पटना, बिहार के सरकारी प्रारंभिक विद्यालयों में बच्चों को अब पका-पकाया भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। शिक्षा विभाग ने पीएम पोषण योजना के तहत मध्याह्न भोजन व्यवस्थापक के माध्यम से पायलट प्रोजेक्ट के रूप में बच्चों को पका पकाया भोजन उपलब्ध कराने का फैसला लिया है। इसमें रसोइया को भी अच्छा मौका दिया गया है। उन्हें व्यवस्थापक बनने का मौका दिया जाएगा। हालांकि, व्यवस्थापक बनने के लिए उन्हें सरकार की एक शर्त पूरी करनी होगी। पहले चरण में चिह्नित 10 जिलों में चयनित दो-दो पंचायत यानी कुल 20 पंचायतों के सभी विद्यालयों में प्रोजेक्ट लागू होगा। ये जिले मधुबनी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, गया, वैशाली, पूर्वी चंपारण, पूर्णियां, भागलपुर, लखीसराय और औरंगाबाद हैं।

खिलाने में समय व्यर्थ होता था इसलिए व्यवस्था में बदलाव - प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए संबंधित जिलाधिकारियों को पत्र भेजा है। इसके मुताबिक विद्यालयों में मध्याह्न भोजन तैयार कराने एवं बच्चों के खिलाने में अधिकतर समय व्यर्थ जाता है। इसके कारण बच्चों एवं शिक्षकों का बहुमूल्य समय नष्ट होता है। इसलिए बच्चों को पका-पकाया भोजन उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक पंचायत के लिए मध्याह्न भोजन व्यवस्थापक एवं सहायक व्यवस्थापक चयनित किया जाएगा जिसके ऊपर योजना के संचालन की पूर्ण जवाबदेही होगी। इसमें खाद्य सामग्री क्रय करना, भोजन बनवाना, बच्चों को भोजन खिलाना व रसोईघर की साफ-सफाई समेत अन्य कार्य शामिल है।

रसोइया भी बन सकते हैं व्यवस्थापक जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा व्यवस्थापक एवं सहायक व्यवस्थापक का चयन किया जाएगा। इसमें रसोइया को भी मौका मिलेगा। यदि रसोइया स्नातक पास हैं तो उन्हें मौका दिया जाएगा।

व्यवस्थापक के लिए शिक्षा सेवक/विकास मित्र/प्रखंड साधन सेवी (मध्याह्न भोजन योजना) अथवा प्रखंड/पंचायत स्तर पर उपलब्ध किसी मानवबल से चयन किया जा सकता है। व्यवस्थापक की शैक्षणिक योग्यता कम से कम स्नातक होनी चाहिए। सहायक की योग्यता मैट्रिक अथवा इंरमीडिएट होनी चाहिए। यह ध्यान रहे कि मध्याह्न भोजन योजना के तहत विद्यालयों में रसोईया व सहायक रसोईया कार्यरत है।

इनमें से कई रसोईया का शैक्षणिक योग्यता स्नातक है। यदि ऐसे रसोईया स्वेच्छा से व्यवस्थापक का दायित्व निभाना चाहते है तो उनके चयन पर भी विचार किया जा सकता है। जिस किसी कर्मी को व्यवस्थापक का दायित्व दिया जाएगा वे अपने कार्य के अतिरिक्त उक्त दायित्व का भी निर्वहन करेंगे। इस कार्य हेतु उन्हें अलग से वेतन/मानदेय या अन्य भत्ता देय नहीं होगा।

व्यवस्थापक का कार्य जिस तिथि से व्यवस्थापक द्वारा मध्याह्न भोजन का संचालन किया जाएगा उस तिथि से खाद्यान्न का स्टाक उसकी देखरेख में रहेगा। मानक के अनुसार कक्षा पहली से पांचवी तक के प्रति छात्र प्रतिदिन 100 ग्राम चावल और कक्षा छठी से आठवीं तक के प्रति छात्र 150 ग्राम चावल उपयोग किया जाएगा।

पंजी का संधारण व्यवस्थापक के जिम्मे होगा और प्राप्त खाद्यान्न की मात्रा, उपयोग किए गए खाद्यान्न की मात्रा, प्राप्त राशि, खाद्य सामग्री क्रय हेतु व्यय राशि आदि पंजी दर्ज करेंगे। भोजन बनाने हेतु पहली से पांचवीं कक्षा तक के प्रति छात्र पांच रुपये 45 पैसे और छठी से आठवीं कक्षा तक के प्रति छात्र आठ रुपये 17 पैसे तय है।